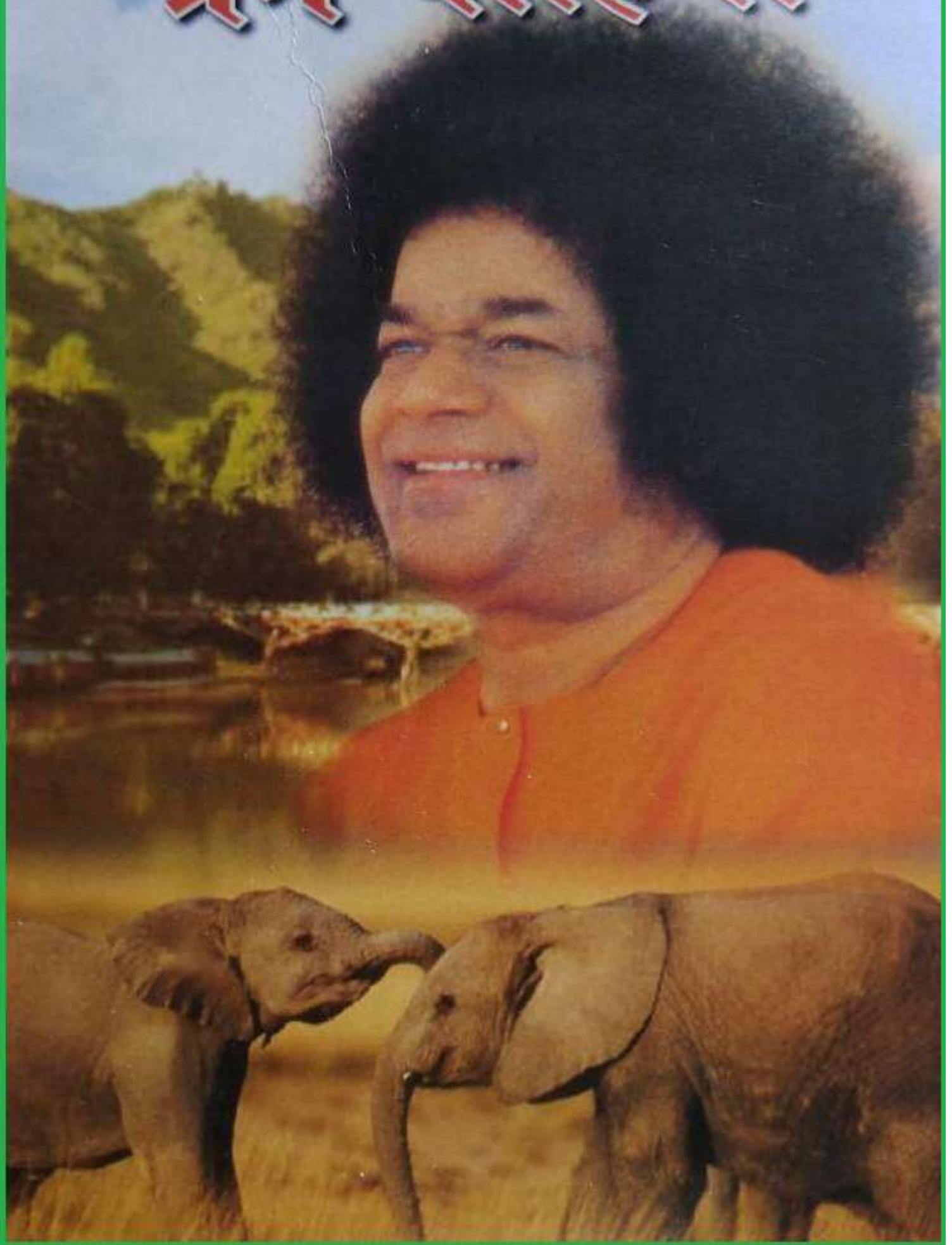


प्रेम वाहिनी



जीवन के कर्तव्य

हृदय की कालिमा को नैतिक जीवन के द्वारा कर्तव्यपरायण रह कर दूर रखना चाहिए। एक ऐसा भी समय आता है जब मानव थका हुआ और दुर्बलता प्रतीत करता है; तब उसे इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिये, “भगवन् परिस्थितियाँ मेरी सामर्थ्य से बाहर हो गई हैं, उनके आगे प्रयत्न करना अपने ऊपर असह्य तनाव और थकान को निमन्त्रण देना है, प्रभो मुझे शक्ति दीजिये।”

प्रारम्भ में भगवान साधक से कुछ दूर रहकर उसके प्रयासों का अवलोकन करता है, ठीक उसी प्रकार जैसे शिक्षक छात्र से अलग रहता है जबकि वह अध्यापक के दिये हुये प्रश्नों का उत्तर लिख रहा होता है। तब जबकि मनुष्य भोगासक्ति त्याग कर सत्कर्मों में, सेवा में, लग जाता है, भगवान् उत्साह बढ़ाते हुए समीप आते हैं। क्योंकि वे तो सूर्य नारायण की तरह हैं जो कि द्वार बन्द रहने तक बाहर ही प्रतीक्षा करते हैं; उस सेवक की तरह जो अपने कर्तव्यों और स्वामी के अधिकारों की सीमा से सुपरिचित होता है। वह न तो अपनी अपस्थिति की सूचना की घोषणा करता है और न दरवाजा ही झड़क से बन्द करता है। वह केवल प्रतीक्षा करता है जब स्वामी दरवाजे को थोड़ा सा खोलता है, सूर्य तत्क्षण प्रवेश करके अन्धकार को अन्दर से भगा देता है। जब उस (भगवान) से सहायता की पुकार की जाती है, वही पुकारने वाले के समीप ही हाथ बढ़ाकर सहायता करने के लिये तत्पर मिलता है। इसलिये, मानव से केवल विवेक की अपेक्षा की जाती है, ऐसा विवेक जो भगवान् से प्रार्थना करने को उन्मुख करे, उस ज्ञान की जो उस (भगवान) का स्मरण कराए।